एकता और एकमत से भारत बनेगा स्वर्णिम : दादी रत्नमोहिनी जी

आबू पर्वत, ज्ञान सरोवर,१२जून २०१५। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में देश के सभी प्रदेशों से करीब ५५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। दीप प्रज्वलित करके सम्मेलन का उद्घाटन संपन्न हुआ। आध्यात्मिकता द्वारा स्वच्छ,स्वर्णिम एवं सशक्त भारत का निर्माण विषय पर यह सम्मेलन आयोजित हुआ।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका **दादी रत्नमोहिनी जी** ने सम्मेलन को अपने आर्शीवचन इन शब्दों में दिये। आपने कहा कि भारत एक समय सोने की चिडियाँ था। अब एक बार फिर से हम अपने देश को वैसा ही स्वर्णिम बनाएंगे। आपस में एकता रखकर,एकमत होकर अगर स्वर्णिम बनाने का संकल्प कर लें तो अपना देश वैसा फिर से बन जाएगा। भगवान ने वायदा किया है कि धर्मग्लानि के समय मैं आकर फिर से भारत को स्वर्णिम स्थिति में लेकर आउंगा।

ब्रह्माकुमारीज भूतल परिवहन प्रभाग की राष्ट्रय संयोजिका **राजयोगिनी दिव्या बहन** ने आज के सम्मेलन की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आपने सभी प्रतिनिधियों को सलाह दी कि वे स्वच्छ,स्वस्थ एवं स्वर्णिम भारत की स्थापना का श्रेष्ठतम लक्ष्य ले कर चल रहे हैं। यह अच्छा है। इसके लिये सर्वप्रथम उन्हें खुद को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाना होगा। राजयोग को सीखकर और अपने दैनिक जीवन में इसको अपना कर वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर पाएंगे।

मुख्य अतिथि **सांसद बुलंदशहर भाई डॉ भोला सिंह** जी ने सम्मेलन के मुख्य अतिथि की हैसियत से कहा कि यह एक अति उत्म शुरुआत हुई है इस संस्था के द्वारा। किसानों के हित के लिये कुछ करने से पूरे देश में खुशहाली आएगी। किसान अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं। हमारे प्रधान मंत्री किसानों के हित के लिये अनेक योजनाएं लेकर आए हैं। एक किसान चैनल भी अस्तित्व में आया है। आपने किसानों के सशक्तिकरण के लिये जो किया है मैं सदैव आपके साथ हूँ।

ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका **राजयोगिनी सरला बहन** जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत की संस्कृति स्वर्णिम रही है। एक बार फिर से इसको सशक्त बनाना है तो इसकी आत्मा को मजबूत बनाना होगा। कृषक हमारे देश की आत्मा हैं। गॉव के साथ साथ कृषकों एवं सबका मन स्वच्छ बनाना होगा। आध्यात्मिकता के बल से ही ऐसा होगा। गाँव की आपसी समस्याओं की समाप्ति भी आध्यात्मिकता के बल पर हो पाएगी। हर प्रकार की स्वच्छता ही आधार है संपन्नता का। खेती को स्वच्छ विचारों की सहायता से उत्तम बनाने का प्रयोग ब्रह्माकुमारीज के साथ साथ अनेक कृषि विश्वविद्यालयों ने भी अपनाया है और सफलता पाई है।

युवा प्रभाग की वरिष्ठ सदस्य **ब्रह्माकुमारी जागृति बहन** ने सम्मेलन के विषय पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि स्वच्छता में ही प्रभुता है। स्थूल से लेकर सूक्ष्म तक की स्वच्छता ही भारत को एक बार फिर से इसका खोया गौरव वापस दिलायेगा। मन की शुद्धता के आधार पर स्थानीय वातावरण से लेकर अखिल विश्व तक, आपसी रिश्तों से लेकर वैश्विक रिश्तों तक सभी सुधरेंगे। भय मुक्त भारत ही सशक्त होगा। भय मुक्ति के लिये आंतरिक शक्तियों की

समझ आवश्यक है। आध्यात्मिता हमें इस आंतरिक समझ के रूबरू लाती है। आध्यात्मिकता ही लुप्त कड़ी है सर्व सफलताओं के लिये। इन तीन दिनों में हम आध्यात्मिकता की गहराई को जानेंगे।

नाबार्ड की सी जी एम बहन पद्मा रघुनाथ जी ने अपने प्रवचन में कहा कि भारत का किसान आज विपदा की स्थिति में हैं। नाबार्ड किसानों के हितों के लिये अनेक काम करती आई है। यहाँ हम ग्रामविकास के तरीकों के साथ साथ आध्यात्मिकता भी सीखते हैं । सम्मेलन का उद्घाटन करके मुझे अपार प्रसन्नता है।

नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर सीड अजमेर से पधारे **डॉ.बलराज सिंह** जी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कहा कि मैं आयोजकों के प्रति अपना आभार प्रकट कर रहा हूँ। यह सम्मेलन सामयिक है। आज किसानों के हित की चिंता करने वाले कम लोग हैं, ऐसे में संस्था इतना सुंदर काम कर रही है। इनके अपने सदस्यों के बीच गजब का समायोजन है । ऐसा उदाहरण कम देखने को मिलता है।

आज हमारे मूल्यों में गिरावट आने से ही स्थिति विकट हुई है। मूल्यों को अपना कर हम अपनी स्थिति को सुधार सकते हैं। हमारी यह संस्था इस कार्य में लगी हुई है। इनके सहयोग से हम देश की स्थिति को सुधार सकेंगे। साथ ही साथ हम सभी को श्रम की महिमा को भी समझना चाहिये। हम काहिली को न अपनाएं। मेडीटेशन से अद्भुत फायदे हो रहे हैं कृषि के क्षेत्र में। उसको अपनाया जाना चाहिये।

ग्राम विकास प्रभाग के मुख्यालय संयोजक **ब्रह्माकुमार राजू भाई** ने अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि भारत गॉवों का देश है। श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए आज ४ सत्ताओं की जरूरत है। वे चारों सत्ताएं हैं, विज्ञान सत्ता, राज्य सत्ता, धर्म सत्ता और श्रेष्ठ कर्मों की सत्ता। पहली तीन सत्ताएं तो अपना अपना काम कर ही रही हैं मगर जो चौंथी सत्ता है उसकी क्रियाशीलता के लिये राजयोग का अभ्यास जरूरी होगा। वह आप यहाँ सीखेंगे। आध्यात्मिकता इसमें आपकी मदद करेगी।

ब्रह्माकुमारी **शारदा बहन** ने मंच का संचालन किया एवं ब्रह्माकुमार **राजेन्द्र भाई** ने आभार प्रदर्शन किया। (रपटःबी के गिरीश, ज्ञानसरोवर)।